

समाजीकरण (Socialisation)

प्रत्येक समाज को एक जिम्मेदार सदस्य बनाने की आवश्यकता का सामना करना पड़ता है, जिसमें जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को बाहर रखा जाता है। बच्चे को समाज की उम्मीदों को सीखना चाहिए ताकि उसके व्यवहार पर भरोसा किया जा सके। उसे समूह के मानदंडों का अधिग्रहण करना चाहिए। समाज को प्रत्येक सदस्य का सामाजिकरण करना चाहिए ताकि समूह के मानदंडों के संदर्भ में उसका व्यवहार सार्थक हो। समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति समाज की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं को सीखता है।

समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसकी सहायता से एक जीवित जीव को एक सामाजिक प्राणी में बदल दिया जाता है। यह एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से युवा पीढ़ी वयस्क भूमिका सीखती है जिसे बाद में निभाना पड़ता है। यह एक व्यक्ति के जीवन में एक सतत प्रक्रिया है और यह पीढ़ी से पीढ़ी तक जारी है।

समाजीकरण का अर्थ (Meaning of Socialisation) :

नवजात शिशु एक जीव मात्र है। समाजीकरण उसे समाज के लिए उत्तरदायी बनाता है। वह सामाजिक रूप से सक्रिय है। वह एक 'पुरुष' बन जाता है और वह संस्कृति जिसे उसका समूह अपने में समाहित कर लेता है, उसका मानवीकरण कर देता है और उसे 'मानुष' बना देता है। प्रक्रिया वास्तव में, अंतहीन है। उनके समूह का सांस्कृतिक पैटर्न, बच्चे के व्यक्तित्व में शामिल हो जाता है। यह उसे समूह में फिट होने और सामाजिक भूमिकाएं निभाने के लिए तैयार करता है। यह शिशु को सामाजिक व्यवस्था की रेखा पर सेट करता है और एक वयस्क को नए समूह में फिट होने में सक्षम बनाता है। यह आदमी को नए सामाजिक क्रम में खुद को समायोजित करने में सक्षम बनाता है।

समाजीकरण मानव मस्तिष्क, शरीर, दृष्टिकोण, व्यवहार और आगे के विकास के लिए खड़ा है। समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक दुनिया में शामिल करने की प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। समाजीकरण शब्द का तात्पर्य अंतःक्रिया की प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से बढ़ता हुआ व्यक्ति उस सामाजिक समूह की आदतों, दृष्टिकोणों, मूल्यों और विश्वासों को सीखता है जिसमें वह पैदा हुआ है।

समाज के दृष्टिकोण से, समाजीकरण वह तरीका है जिसके माध्यम से समाज अपनी संस्कृति को पीढ़ी से पीढ़ी तक पहुंचाता है और खुद को बनाए रखता है। व्यक्ति के दृष्टिकोण से, समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवहार सीखता है, अपने 'स्व' का विकास करता है।

यह प्रक्रिया दो स्तरों पर संचालित होती है, एक शिशु के भीतर जिसे आसपास की वस्तुओं का आंतरिककरण कहा जाता है और दूसरे को बाहर से। सामाजिककरण को "सामाजिक मानदंडों के आंतरिककरण" के रूप में देखा जा सकता है। सामाजिक नियम व्यक्ति के लिए आंतरिक हो जाते हैं, इस अर्थ में कि वे बाहरी विनियमन के माध्यम से लगाए जाने के बजाय स्वयं लगाए जाते हैं और इस प्रकार व्यक्ति के स्वयं के व्यक्तित्व का हिस्सा होते हैं।

इसलिए व्यक्ति को विश्वास करने की इच्छा होती है। दूसरे, इसे सामाजिक संपर्क के आवश्यक तत्व के रूप में देखा जा सकता है। इस मामले में, व्यक्तियों का सामाजिककरण हो जाता है क्योंकि वे दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करते हैं। समाजीकरण की अंतर्निहित प्रक्रिया सामाजिक संपर्क से बंधी हुई है।

समाजीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है। हॉर्टन और हंट के अनुसार, समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने समूहों के मानदंडों को आंतरिक बनाता है, जिससे कि एक विशिष्ट यूनिक स्वयं उभरता है, जो इस व्यक्ति के लिए अद्वितीय है।

समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से, व्यक्ति एक सामाजिक व्यक्ति बन जाता है और अपने व्यक्तित्व को प्राप्त करता है। ग्रीन ने समाजीकरण को "उस प्रक्रिया के रूप में जिसके द्वारा बच्चे को एक सांस्कृतिक सामग्री प्राप्त होती है, साथ ही स्वार्थ और व्यक्तित्व" ।

लुंडबर्ग के अनुसार, समाजीकरण में “बातचीत की जटिल प्रक्रियाएँ होती हैं, जिसके माध्यम से व्यक्ति उन आदतों, कौशलों, विश्वासों और निर्णय के मानक को सीखता है जो सामाजिक समूहों और समुदायों में उसकी प्रभावी भागीदारी के लिए आवश्यक हैं” ।

पीटर वॉस्ली ने समाजीकरण को “संस्कृति के संचरण की प्रक्रिया” के रूप में समझाया, जिसके द्वारा पुरुष सामाजिक समूहों के नियमों और प्रथाओं को सीखते हैं।

एच.एम. जॉनसन ने समाजीकरण को “सीखने के रूप में परिभाषित किया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाएँ निभाने में सक्षम बनाता है” । वह आगे कहते हैं कि यह एक “प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति पहले से मौजूद समूहों की संस्कृति को प्राप्त करते हैं” ।

समाजीकरण का दिल “, किंग्सले डेविस को उद्धृत करने के लिए।” आत्म या अहंकार का उद्भव और क्रमिक विकास है। यह स्वयं के संदर्भ में है कि व्यक्तित्व आकार लेता है और मन कार्य करता है “। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नवजात व्यक्ति, जैसा कि वह बड़ा होता है, समूह के मूल्यों को प्राप्त करता है और एक सामाजिक प्राणी में ढाला जाता है।

प्राथमिक, माध्यमिक और वयस्क जैसे विभिन्न चरणों में समाजीकरण होता है। प्राथमिक चरण में परिवार में युवा बच्चे का समाजीकरण शामिल है। माध्यमिक चरण में स्कूल शामिल है और तीसरा चरण वयस्क समाजीकरण है।

समाजीकरण, इस प्रकार, सांस्कृतिक सीखने की एक प्रक्रिया है, जिसके तहत एक नया व्यक्ति एक सामाजिक प्रणाली में एक नियमित भूमिका निभाने के लिए आवश्यक कौशल और शिक्षा प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया अनिवार्य रूप से सभी समाजों में समान है, हालांकि संस्थागत व्यवस्थाएँ बदलती हैं। यह प्रक्रिया जीवन भर जारी रहती है क्योंकि प्रत्येक नई स्थिति उत्पन्न होती है। समाजीकरण व्यक्तियों को समूह जीवन के विशेष रूपों में फिट करने की प्रक्रिया है, जो मानव जीवों को सामाजिक रूप से रेत में परिवर्तित कर सांस्कृतिक परंपराओं को परिवर्तित कर रहा है।

समाजीकरण की विशेषताएँ (Features of Socialisation) :

समाजीकरण न केवल सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के रखरखाव और संरक्षण में मदद करता है बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मूल्यों और मानदंडों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रेषित किया जाता है।

1. बुनियादी अनुशासन को शामिल करता है (Inculcates basic discipline) :

समाजीकरण बुनियादी अनुशासन को विकसित करता है। एक व्यक्ति अपने आवेगों को नियंत्रित करना सीखता है। वह सामाजिक अनुमोदन प्राप्त करने के लिए एक अनुशासित व्यवहार दिखा सकता है।

2. मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में मदद करता है (Helps to control human behaviour) :

यह मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में मदद करता है। जन्म से मृत्यु तक एक व्यक्ति प्रशिक्षण और उसके व्यवहार से गुजरता है, व्यवहार कई तरीकों से नियंत्रित होता है। सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, समाज में निश्चित प्रक्रियाएँ या तंत्र हैं। ये प्रक्रियाएँ मनुष्य के जीवन का हिस्सा बन जाती हैं और मनुष्य समाज के साथ समायोजित हो जाता है। समाजीकरण के माध्यम से, समाज अपने सदस्यों के व्यवहार को अनजाने में नियंत्रित करना चाहता है।

3. समाजीकरण की एजेंसियों के बीच अधिक मानवता होने पर समाजीकरण तेजी से होता है (Socialisation is rapid if there is more humanity among the- agencies of socialisation) :

यदि समाजीकरण की एजेंसियाँ अपने विचारों और कौशल में अधिक सर्वसम्मत हैं, तो समाजीकरण तेजी से होता है। जब घर में प्रसारित विचारों, उदाहरणों और कौशलों के बीच संघर्ष होता है और स्कूल या सहकर्मियों द्वारा प्रेषित किया जाता है, तो व्यक्ति का समाजीकरण धीमा और अप्रभावी हो जाता है।

4. समाजीकरण औपचारिक और अनौपचारिक रूप से होता है (Socialisation takes place formally and informally) :

औपचारिक समाजीकरण स्कूलों और कॉलेजों में प्रत्यक्ष शिक्षा और शिक्षा के माध्यम से होता है। परिवार, हालांकि, प्राथमिक और शिक्षा का सबसे प्रभावशाली स्रोत है। बच्चे परिवार में अपनी भाषा, रीति-रिवाज, मानदंड और मूल्य सीखते हैं।

5. समाजीकरण निरंतर प्रक्रिया है (Socialisation is continuous process) :

समाजीकरण एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। जब बच्चा बालिग हो जाता है तो वह नहीं रहता है। जब बच्चा वयस्क हो जाता है, तो समाजीकरण समाप्त नहीं होता है, पीढ़ी से पीढ़ी तक संस्कृति का आंतरिककरण जारी रहता है। समाज खुद को संस्कृति के आंतरिककरण के माध्यम से नष्ट कर देता है। इसके सदस्य संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं और समाज का अस्तित्व बना रहता है।

समाजीकरण के प्रकार (Types of Socialisation) :

यद्यपि समाजीकरण बचपन और किशोरावस्था के दौरान होता है, यह मध्य और वयस्क उम्र में भी जारी रहता है। ओरविल एफ। ब्रिम (जूनियर) ने समाजीकरण को जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया। उन्होंने कहा कि वयस्कों का समाजीकरण बचपन के समाजीकरण से अलग है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न प्रकार के समाजीकरण हैं।

1. प्राथमिक समाजीकरण (Primary Socialisation) :

प्राथमिक समाजीकरण का तात्पर्य शिशु के समाजीकरण से उसके जीवन के प्राथमिक या प्रारंभिक वर्षों में है। यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिशु भाषा और संज्ञानात्मक कौशल सीखता है, मानदंडों और मूल्यों को आंतरिक करता है। शिशु किसी दिए गए समूह के तरीके सीखता है और उस समूह के एक प्रभावी सामाजिक भागीदार में ढाला जाता है।

समाज के मानदंड व्यक्ति के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं। बच्चे में गलत और सही की भावना नहीं है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अवलोकन और अनुभव से, वह धीरे-धीरे गलत और सही चीजों से संबंधित मानदंडों को सीखता है। प्राथमिक समाजीकरण परिवार में होता है।

2. माध्यमिक समाजीकरण (Secondary Socialisation) :

प्रक्रिया को, पीयर ग्रुप 'में, तत्काल परिवार के बाहर काम पर देखा जा सकता है। बढ़ता बच्चा अपने साथियों से सामाजिक आचरण में बहुत महत्वपूर्ण सबक सीखता है। वह स्कूल में पाठ भी सीखता है। इसलिए, परिवार के परिवेश से परे और बाहर समाजीकरण जारी है। माध्यमिक समाजीकरण आम तौर पर संस्थागत या औपचारिक सेटिंग्स में बच्चे द्वारा प्राप्त सामाजिक प्रशिक्षण को संदर्भित करता है और जीवन भर जारी रहता है।

3. वयस्क समाजीकरण (Adult Socialisation) :

वयस्क समाजीकरण में, अभिनेता भूमिकाएं दर्ज करते हैं (उदाहरण के लिए, एक कर्मचारी, एक पति या पत्नी बनना) जिसके लिए प्राथमिक और माध्यमिक समाजीकरण ने उन्हें पूरी तरह से तैयार नहीं किया होगा। वयस्क समाजीकरण लोगों को नए कर्तव्यों को निभाना सिखाता है। वयस्क समाजीकरण का उद्देश्य व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन लाना है। वयस्क समाजीकरण से अधिक व्यवहार बदलने की संभावना है, जबकि बाल समाजीकरण बुनियादी मूल्यों को ढालता है।

4. प्रत्याशात्मक समाजीकरण (Anticipatory Socialisation) :

प्रत्याशात्मक समाजीकरण एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा पुरुष उस समूह में शामिल होने की प्रत्याशा के साथ एक समूह की संस्कृति को सीखते हैं। जैसा कि एक व्यक्ति किसी स्थिति या समूह की उचित

मान्यताओं, मूल्यों और मानदंडों को सीखता है, जिसकी वह इच्छा करता है, वह सीख रहा है कि अपनी नई भूमिका में कैसे कार्य करें।

5. पुनः समाजीकरण (Re-socialisation) :

पुनः समाजीकरण पूर्व व्यवहार पैटर्न को छोड़ने और एक के जीवन में एक परिवर्तन के हिस्से के रूप में नए लोगों को स्वीकार करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। ऐसा पुनः समाजीकरण ज्यादातर तब होता है जब सामाजिक भूमिका मौलिक रूप से बदल जाती है। इसमें दूसरे के लिए जीवन का एक तरीका छोड़ना शामिल है जो न केवल पूर्व से अलग है, बल्कि इसके साथ असंगत है। उदाहरण के लिए, जब एक अपराधी का पुनर्वास होता है, तो उसे अपनी भूमिका को मौलिक रूप से बदलना होगा।

डॉ० मनीषा भूषण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर—समाजशास्त्र